अत्यन्त बलिष्ठ है। अपने अनीश्वरवादी स्वभाव के कारण नास्तिक उसकी क्रिया-विधि से अवगत नहीं हो सकता और न ही श्रीभगवान् की योजना को जान सकता। सम्मोह, रजोगुण और तमोगुण से आवृत होने के कारण उसकी सब योजनाएँ विफल हो जाती हैं, उसी प्रकार जैसे वैज्ञानिक, दार्शनिक, प्रशासक तथा शिक्षावित् होते हुए भी हिरण्यकशिपु, रावण आदि की योजनाएँ धूल में मिल गई थीं। दुष्टों के चार वर्ग हैं—

(१) **मूढ:** भारवाहक पशुओं जैसे महामूर्ख व्यक्तियों को मूढ़ कहा जाता है। वे अपने परिश्रम के फल को स्वयं भोगने की तृष्णा रखते हैं, इसलिए उसे श्रीभगवान् को अर्पित करना उन्हें अच्छा नहीं लगता। इस प्रकार के नरपशुओं का सबसे उपयुक्त उदाहरण गधा है। इस दीन पशु से उसका स्वामी अतिश्रम कराता है। गधा नहीं जानता कि वह किसके लिए दिन-रात इतना उद्यम करता है। सूखे तिनकों से पेट भरने, स्वामी से नित्यभयभीत रहते कुछ समय विश्राम करने, और बारम्बार गधी की लात खा-खाकर भी गधा मैथुन में तृप्ति मानता है। कभी-कभी वह कविता अथवा दर्शन का भी गान करता है, परन्तु उसका खरनाद दूसरों को क्षोभ पहुँचाने में ही सफल होता है। कर्म किसके लिए करना चाहिए, इस ज्ञान से रहित मूढ़ सकाम कर्मी की ठीक यही स्थिति है। वह नहीं जानता कि कर्म केवल यज्ञ (विष्णु) के लिये करना चाहिये।

स्वकल्पित कर्तव्यों के बोझ से दबे रहकर दिन-रात कठोर परिश्रम करने वाले प्रायः कहते हैं कि आत्मा के अमृत-स्वरूप की चर्चा सुनने के लिये उनके पास समय नहीं है। ऐसे मूढ़ों के लिए अनित्य विषय-लाभ जीवन का सर्वस्व है, हाँलाकि वे अपने परिश्रम-फल के अल्पांश का ही उपभोग कर पाते हैं। मूढ विषय-लाभ के लिये निद्रारहित दिन-रात बिताते हैं; उदरव्रण अथवा मन्दाग्नि से पीड़ित होने पर भी उत्तम से उत्तम भोजन से उनकी तृप्ति नहीं हो पाती। मायिक स्वामी के लिए दिन-रात अथक परिश्रम करने में वे अभिरत रहते हैं। अपने सच्चे स्वामी को न जानकर ऐसे मूढ़ कर्मी माया की सेवा में अपने अमूल्य समय का अपव्यय कर रहे हैं। दुर्भाग्यवश, सब स्वामियों के परम स्वामी (भगवान्) की शरण में वे कभी नहीं जाते और न ही समय निकाल कर प्रामाणिक आचार्यमुख से उनकी कथा का श्रवण करते हैं। विष्ठा खाने वाले सुअर को चीनी और घी से बने मिष्ठान्न कभी अच्छे नहीं लग सकते। ऐसे ही, मूढ़ कर्मी जगत् को आन्दोलित करने वाली चंचल प्राकृत शक्ति की इन्द्रियतृप्तिदायक वार्ताओं को ही निरन्तर सुना करता है।

(२) द्वितीय कोटि के दुष्ट **नराधम**, अर्थात् मनुष्यों में परम अधम कहलाते हैं। ८४,००,००० योनियों में ४,००,००० मानवीय योनियाँ हैं। इनमें अनेक नीच योनियों के मनुष्य प्रायः असभ्य होते हैं। जो सामाजिक, राजनैतिक एवं धार्मिक विधि-विधान से युक्त हैं, वे सभ्य कहे जाते हैं। सामाजिक एवं राजनैतिक दृष्टि से